Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPPCL

UTTAR PRADESH POWER CORPORATION LIMITED

तकनीशियन (विद्युत)

भाग-2

हिन्दी और अग्रेंजी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1.	संधि	1
2.	समास	7
3.	लिंग	11
4.	वचन	11
5.	कारक	13
6.	अव्यव या अविकारी शब्द	22
7.	तत्सम–तद्भव	24
8.	वर्तनी शुद्धि	26
9.	पर्यायवाची	27
10.	विलोम शब्द	38
11.	वाक्यांश के लिए एक शब्द	44
12.	अलंकार	49
13.	मुहावरे	53
14.	लोकोक्ति	63
15.	अपठित गद्यांश	79

English

1.	Conditional Sentence	90
2.	Conjunction	91
3.	Article	94
4.	Preposition	97
5.	Subject verb Agreement	101
6.	Pronoun	101
7.	Noun	104
8.	Tense	111
9.	Verb	115
10.	Adverb	123
11.	Narration/Speech	127
12.	Adjective	129
13.	Model verbs	133
14.	Article (a, an , the)	139
15.	Active- Passive Voice	143
16.	One word substitutions	150
17.	Antonyms and synonyms	159
18.	Idiom / Phrases	164
19.	Reading Comprehension	172
20.	Sentence Rearrangement	187
21.	Fillers	192
22.	Error Detection	199

संधि

- संधि का शाब्दिक अर्थ – मेल/जोडना
- संधि का संधि विच्छेद – सम + धि
- संधि शब्द का विलोम – विग्रह/विच्छेद
  जैसे :– जगत् + ईश – जगदीश

- संधि – दो या दो से अधिक वर्णो के मेल होने से वर्णो में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें संधि कहते है।

- संधि सदैव समान अर्थ में होती है। विरोधी अर्थों में संधि नहीं होती

- विश्व + अनाथ – विश्वनाथ – विश्व नाथ
  विश्व + अमित्र – विश्वामित्र – विश्व मित्र
  दीन+अनाथ – दीनानाथ – दीन नाथ
  षट् + अंग – षडंग
- संधि में सदैव वर्णो में विकार परिवर्तन उत्पन्न होना चाहिए तो संधि होती है। यदि वर्णो में विकार उत्पन्न नहीं होता है तो संधि नहीं होकर वह संयोग कहलाता है।

- अन् + उचित / अनुचित
  संयोग – निर् + अर्थक / निरर्थक
  सम् + उचित / समुचित

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

- स्वर संधि :– यदि स्वर के बाद स्वर आता है तो स्वर में विकार उत्पन्न हो जाता है उसे स्वर संधि कहते है।
  स्वर संधि के पाँच भेद :–

1. दीर्घ स्वर संधि :– (आ, ई, ऊ)

नियम

1. यदि अ/आ के बाद सवर्ण अ या आ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'आ ' हो जाता है।

2. इ या ई के बाद सवर्ण इ या ई आता है दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश ई हो जाता है।

- नियम 3 – यदि उ या ऊ के बाद सवर्ण उ या ऊ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश ऊ हो जाता है
- उदाहरण – अ /आ या आ /अ

दाव + अग्नि = दावाग्नि जगंल की आग
राम + अयन = रामायण
पंच + आयत = पंचायत
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
दीप + अवली = दीपावली

वडवा + वडव अग्नि – वडवाग्नि समुद्र की आग
काम + अग्नि – कामाग्नि
जठर + अग्नि – जठराग्नि पेट की आग
रवि + इन्द्र – रवीन्द्र
कवि + ईश – कवीश
नदी + ईश – नदीश
मही + इन्द्र – महीन्द्र
वधु + उल्लास – वधूल्लास
चमू + उल्लास – चमूल्लास
भानु + उदय – भानूदय
धेनू + उत्सव – धेनूत्सव

2. गुण सन्धि –
नियम 1 –यदि अ आ के बाद इ या ई आये तो ए हो जाता है ।
नियम 2 – अ आ के बाद उ ऊ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।
नियम 3 – अ आ के बाद ऋ आता है तो दोनो के स्थान पर 'अर' हो जाता है।

उदाहरण – महा + ईश – महेश
महा + इन्द्र – महेन्द्र
रमा + ईश – रमेश
गण + ईश – गणेश
चाँदनी राका + ईश – राकेश
हर्षीक + ईश – हर्षीकेश
वसंत + उत्सव – वसंतोत्सव
गंगा + उत्सव – गंगोत्सव
गंगा + ऊर्मि – गंगोर्मि
समुद्र + ऊर्मि – समुद्रोर्मि
शीत + उत्सव – शीतोत्सव
महा + ऋषि – महार्षि

- सन्धि –
नियम 1 – अ आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।
नियम 2 – यदि अ आ के बाद ओ या औ आता है तो दोनो के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

उदाहरण - सदा + एव - सदैव
महा + ऐश्वर्य - माहैश्वय
महा + ओज - महौज
महा + ओघ - महौघ
जल + ओघ - जलौघ
महा + ओषधि - महौषधि
महा + औषधालय - महौषधालय
गंगा + ओघ - गंगौघ
जल + ओघ - जलौघ
एक + एक - एकैक
तथा + एव - तथैव

अपवाद :-
प्र + ऊढ - प्रौढ
अक्ष + ऊहिनी - अक्षौहिनी
स्व + ईरिणी - स्वैरिणी नदी को कहते हैं
शुद्ध + ओदन चावल - शुद्धोदन

4. यण् सन्धि

नियम 1 - इ ई के बाद असमान स्वर आता है तो इ ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है।

नियम 2 - उ ऊ के बाद असमान स्वर आता है तो उ ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है।

नियम 3 - ऋ के बाद असमान स्वर आता है तो ऋ के स्थान पर 'र्' हो जाता है।

अक्षर से पहले आधा अक्षर आता है तो 99% यण सन्धि होगी ।

उदाहरण -
अधि + अयन - अध्ययन
अधि + आय - अध्याय
अनु + अय - अन्वय
गुरू + आदेश - गुर्वादेश
भानु + आगम - भान्वागम
सु + आगत - स्वागत
सु + आर्थ - स्वार्थ
सु + अच्छ - स्वच्छ
सु + अल्प - स्वल्प
मातृ + आज्ञा - मात्राज्ञा
पितृ + आज्ञा - पित्राज्ञा
मातृ + आदेश - मात्रादेश
भ्रातृ + ऐश्वय - भ्रात्रैश्वर्य
धातृ + अंश - धात्रंश

5. अयादि सन्धि

नियम 1 - ए के बाद कोई भी स्वर आये आता है तो ए के स्थान पर अय् हो जाता है।

नियम 2 - ऐ के बाद काई भी स्वर आता है तो ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है

नियम 3 - ओ के बाद कोई स्वर आता है तो ओ के स्थान अव् हो जाता है।

नियम 4 - औ के बाद कोई स्वर आता है तो औ के स्थान पर आव् हो जाता है।

उदाहरण -
ने + अन - नयन
गै + अन - गायन
पो + इत्र - पवित्र
श्रो + अन - श्रवण

रौ + अन - रावण
विधै + अक - विधायक
चे + अन - चयन

पो + अन - पवन
हरे + ए - हरये
धौ + अक - धावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि - व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो व्यंजन मे विकार उत्पन्न हो जाता है उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

नियम 1 -किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि काई स्वर आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण -
जगत् + ईश -जगदीश
वाक् + ईश्वर - वागीश्वर
वाक् + ईश्वरी - वागीश्वरी
उत् + आहरण - उदाहरण

नियम 2 -किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा , चौथा या य,व ,र वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण -
सत् + धर्म - सद्धर्म
षट् + रस - षड्रस
षट् + रिपु - षड्रिपु
अब + ज - अब्ज कमल
अब + द - अब्द बादल

नियम 3 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है और ह के स्थान पर भी उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

उत् + हार – उद्धार
तत् + हित – तद्धित
रत्नमुट् + हिसां – रत्नमुंडिसा
वाक् + हरि – वाग्धरि

नियम 4 – यदि किसी 'वर्ग के चतुर्थ वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आता तो प्रथम चतुर्थ के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

वुध् + अध – बुद्धि
सिध् + धा – सिद्ध
लभ् + धि – लब्धि
युध् + ध – युद्ध

नियम 5 –यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर भी उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है

उदाहरण –

जगत् + नाथ – जगन्नाथ
सत् + मति – सन्मति
मृत + मय – मृन्मय
मृत् + मूर्ति – मृन्मूर्ति
वाक् + मय – वाङ्मय
मृण्मय, मृण्मूर्ति

नियम 6 – यदि म के बाद क से लेकर म तक कोई वर्ण आता है तो म को अनुस्वार हो जाता है या फिर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है

उदाहरण –

सम + धि – संधि/ सन्धि
सम् + गढन – संगठन
सम् + जय – संजय
अलम् + कार – अलंकार
शम् + कर – शंकर
सम् + कर – संकर
सगंठन – सङ्गठन – सडठन
अलंकार – अलङ्कार – अलडकार
शंकर – शडकर

नियम 7 – यदि म के बाद य र ल व ष श स ह आता है ता म के स्थान पर केवल अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण –

सम् + यम – संयम
सम् + शेधन – संशोधन
सम् + सार – संसार
सम् + विधान – संविधान
सम् + हार – संहार

नियम – सम् उपसर्ग के बाद क धातु से बने हुए शब्द (कार , करण , कर्ता , कर) आदि आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है और बीच मे स् का आधम हो जाता है

उदाहरण –

सम् + कार – संस्कार
सम् + कृत – संस्कृत
सम् + करण – संस्करण
सम् + कृति – संस्कृति

नियम – यदि परि उपसर्ग के बाद कृ धातु से बने हुए शब्द (कार, कर्ण, कर्ता , कर , कृति) आते है तो बीच मे मुर्धा ष् का आगम हो जाता है।
कर्तण्य – सही कर्तव्य , कर्त्ता – सही कर्ता

उदाहरण –

परि + करण – परिष्करण
परि + कार – परिष्कार
परि + कर्ता – परिष्कर्ता

नियम 10 – यदि त द् के बाद स्थ आता है तो स्थ के स् लोप हो जाता है

उदाहरण –

उत् + स्थान = उत्थान
उत् + स्थित = उत्थित जागना
उत् + स्थानम् = उत्थानम्

नियम 11 –यदि त द् के बाद क ख प फ त स आता है तो त् ,द् के स्थान पर त् हो जाता है।

उदाहरण –

उद् + कर्ष – उत्कर्ष
उद् + + तम – उत्तम
तद् + पुरूष – तत्पुरूष
ससद् + सम – संसत्सत्र
उद् + खनन – उत्खनन

नियम 12 –यदि निस् दुस् उपसर्ग के बाद क, ट ,प, फ आता है तो निस् दुस् के स् के स्थान पर मुर्धा ष् हो जाता है।

उदाहरण –

निस् + कृर्ष – निष्कर्ष
निस् + टंकार – निष्टंकार
दुस् + कम – दुष्कर्म
दुस् + पाप – दुष्पाप
दुस् + फल – दुष्फल
निष्टंकार – आवाज न करना ।

नियम 13 – ष के बाद त थ आता है तो त के स्थान पर ट थ के स्थान पर ठ हो जाता है।

उदाहरण – सृप् + ति – सृष्टि
दृष् + ति – दृष्टि
हष् + त – हष्ट
पुष् + त –पुष्ट
षष् + थ – षष्ठ

नियम 14 – यदि इ/उ के बाद स आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है

उदाहरण – अभि +सेक – अभिषेक
नि + संग – निषंग
नि + सेध –निषेध
वि + सम – विषम
सु + समा – सुषमा

निशंग – तरकस – राष् + त्र – राष् + ट्र
राष्ट्र + संन्धि – राष् + त्र = राष्ट्र

नियम 15 - यदि इ/उ के बाद स्थ आता है तो स्थ के स्थान पर ष्ठ हो जाता है।

उदाहरण – नि + स्था – निष्ठा
प्रति + स्था – प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित –प्रतिष्ठित
युधि + स्थिर – युधिष्ठिर

नियम – 16 यदि किसी स्वर के बाद अगर छ आता है तो बीच में च् का आगम हो जाता है।

उदाहरण – अनु + छेद – अनुच्छेद
वि + छेद – विच्छेद
(चारों तरफ का) परि + छेद– परिच्छेद
मातृ + छाया – मातृच्छाया
लक्ष्मी + छाया – लक्ष्मीच्छाया

नियम – 17 यदि त्/द के बाद अगर च, छ आता है तो त् द् के स्थान पर भी च् हो जाता है।

उदाहरण – सत् + चित = सच्चित
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + छेद = उच्छेद
उत् + चारण = उच्चारण

उत् + छिन्न = उच्छिन्न
शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

नियम 18 – यदि त् द् के बाद ज या झ आता है तो त् द् के स्थान पर भी ज् हो जाता है।

उदाहरण –

विद्युत् + ज्योति = विद्युज्जयोति
जगत् + ज्वल = जगज्जवाला
उत् + ज्वल = उज्जवल
वहत् + झंकार = वह्जझंकार
महत् + झंकार = महज्झंकार
जगज्जवाला = जगत की ज्वाला

नियम 19 –यदि क त् द् के बाद ट, ठ, हो तो त् द् के स्थान पर भी ट् हो जाता है।

उदाहरण –

तत् + टीका = तट्टीका
वृहत् + टीका = वृहट्टीका

2. त् द् के बाद ड, ढ होतो ड् हो जाता है।

उदाहरण –

उत् + डयन = उड्डयन
उत् + डीन = उड्डीन

नियम 20 – त् द् के बाद ल हो तो त् द् के स्थान पर भी ल् हो जाता है।

उदाहरण –

तत् + लीन = तल्लीन्
तत् + लय = उल्लय
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + लिखित = उल्लिखित

नियम 20 –यदि के बाद ल आता है तो के स्थान पर म् को अनुनासिक हो जाता है । और बीच मे ल् का आगम हो जाता है।

उदाहरण –

विद्वान् + लिखति – विद्वानल्लिखित
महान् + लिखति – महाँल्लिखति
महान् + लेख – महाँल्लेख
विद्वान् + लेख – विद्वांल्लेख

नियम 21 –यदि त् द् के बाद ष आता है तो त् द् के स्थान च् हो जाता है और ष के स्थान पर छ हो जाता है।

उदाहरण –

तत् + शिव – तच्छिव
उत् + श्वास – उच्छवास
उत् + श्वास – उच्छवास लम्बश्विस
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र – श्रीमच्छरचन्द्र

नियम 22 –यदि अहन् के बाद र से भिन्न वर्ण आता है तो न् के स्थान पर र् हो जाता है

उदाहरण –

अहन् + पति – अहपति दिन का स्वामी
अहन् + ऐश्वर्य – अहरैश्वर्य
अहन + गण – अहगण
अहन् + अहन् – अहरह

अहन् के बाद अहन आता है तो अन्तिम न् का लोप हो जाता है।

नियम 23 –यदि अहन् के बाद र वर्ण आता है तो अहन् के स्थान पर अहो हो जाता है।

उदाहरण–

अहन् + रथ – अहोरथ
अहन् + रूप – अहोरूप
अहन् + रात्रि – अहारात्रि – अहोरात्र
अहोरात्र द्वन्द्व समास

नियम 24 – ऋ र ष के बाद न का ण हो जाता है

उदाहरण –

प्र + नाम – प्रणाम
परि + नाम – परिणाम
परि + नय – परिणय
ऋ + न – ऋण
राम + अयन – रामायण दीर्घ
मीरा + अयन – मीरायण दीर्घ
रस + अयन – रसायण

नियम 26 – यदि म से पहले च वर्ग ट वर्ग त वर्ग या श स , ह ,ल आता है तो न का ण नही होता है ।

उदाहरण –

रस + अयन – रसायन
दक्षिण + अयन – दक्षिणायन
राजा + अयन – राजायन

वर्णलोप –

पक्षिन + राज – पक्षिराज
प्राणिन + नाथ – प्राणिनाथ
युवन + राज – युवराज
प्राणिन् + शास्त्र – प्राणिशास्त्र

विसर्ग सन्धि (:)

विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद स्वर या व्यजन आता है तो विसर्ग स्थान पर विकार उत्पनन हो जाता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है।

नियम 1 – यदि विसर्ग के बाद त थ आता है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

उदाहरण –

नमः + ते – नमस्ते
मनः + ताप – मनस्ताप
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण
बहिः + थल – बहिस्थल
मनः + त्याग – मनस्थल
निः + तेज – निस्तेज
शिरस्त्राण – सिर की रक्षा करना

नियम 2 – यदि विसर्ग के बाद च छ आता है तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है

उदाहरण –

निः + चय – निश्चय
निः + छल – निश्छल
मनश्चिकित्सक मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक
दुः + छल – दुश्छल
आः + चय – आश्चर्य
मनः + चिकित्सा –मनश्चिकित्सा

नियम 3 – यदि विसर्ग से पहले इ या उ और विसर्ग के बाद क ह ट प फ म तो विसर्ग के बाद क ह ठ प जाता है।

उदाहरण –

धनुः + टंकार – धनुष्टंकार
आविः + कार – आविष्कार
आयुः + मति – आयुष्मति
आयु + मान – आयुष्मान
चतुः + कोण – चतुश्पाद
चतुः + कोण – चतुष्कोण
परिः + कार – परिष्कार

नियम 4 – यदि विसर्ग के बाद (ष , श , स) आता है तो विसर्ग को लोप नही होता है या फिर बाद वाला वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

नमः + शिवाय – नमः शिवाय
नि : + शुल्क – निः शुल्क
दुः + स्वप्न – दुः स्वप्न
दुः + शासन – दुः शासन
प्रातः + स्मरण – प्रातः स्मरण
नमश्शिवाय , निश्शुल्क , दुस्स्वप्न, दुश्शासन , प्रातस्स्मरण

नियम 5 – यदि विसर्ग से पहले अ, आ हो और विसर्ग के बाद कृ धातु (कार , कृत, कृति ,करण कर्ता) से बने शब्द आते है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

उदाहरण –

पुरः + कार – पुरस्कार
तिरः + कार – तिरस्कार
भाः + कार – भास्कर
नमः + कार –नमस्कार
वाचः + पति – वाचस्पति
गृहः + पति – गृहस्पति
बृहः + पति – बृहस्पति

नियम 6 – यदि विसर्ग के पहले अ इ उ हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण हो (3 4 5 य र व ल ह) स्वर आता है तो विसर्ग के स्थान पर र हा जाता है।

उदाहरण –

दुः + गम – दुर्गम
निः + धन – निर्धन
पुनः + विवाह – पुनर्विवाह
आशीः + वाद – आशीर्वाद
निः + अन्तर – निरन्तर
पुनः + वास – पुनर्वास
निः + बल – निर्बल
निः + अभ्र – निरभ्र
निरन्तर , दुरात्मा , निरजंन, निरभ्र – बिना बादल

नियम 7 – यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले इ उ का दीर्घ हो जाता है ।

उदाहरण –

निः + रस – नीरस
निः + रोग – नीरोग
दुः + राज – दूराज
निः + रज – नीरज
नीर +ज – जल मे जन्म लेने वाला

नियम 8 – यदि विसर्ग से पहले से अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो पहले वाला अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले अ अवग्रह चिन्ह हो जाता है।

उदाहरण–

कः + अपि – कोऽपि
मनः – अनुकूल – मनोऽनुकूल
मनः + अभिलाषा – मनोऽभिलाषा
शिवः + अर्च्य – शिवोऽर्च्य
पूजा

नियम 9 –

यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण (3 4 5 स्वर को यरलव ह) आता है तो विसर्ग और पहले छोडकर वाला अ मिलकर ओ हो जाता है।

उदाहरण –

मनः + ज – मनोज
मनः + हर – मनोहर
अधः + गति – अधोगति
मनः + विज्ञान – मनोविज्ञान
सरः + ज – सरोज
यशः + दा – यशोदा

नियम 10 – यदि विसर्ग के बाद क ख प फ आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है

उदाहरण –

प्रातः + काल – प्रातः काल
नभः + कतन – नाभः केतन
अन्तः + पुर – अन्तः पुर
मनः + पूत – मनः पूत
मनः + कामना – मनः कामना

समास

समास का अर्थ – संक्षिप्तीकरण
समास का शाब्दिक अर्थ – संक्षिप्तीकरण
समास का विग्रह – सम् + आस त्र समास
इसमे काई सन्धि नही है संयोग है
समास शब्द का विलोम – व्यास
वि + आस – व्यास यण संधि

- दो या दो से अधिक पदो का मेल होता है और बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है उसे समास कहते है।
- मिले हुए पदो को सामासिक पद कहते है। रसोइघर समास का विग्रह रसोई के लिए घर ।
- रसोईघर – रसोई के लिए घर
- समास सदैव विग्रह पर निर्भर करता है पद के विग्रह के आधार पर ही समास का नाम करण होता है।
- समास मे कम से कम दो पद होते है प्रथम पद को पूर्व पद कहते है द्वितीय पद को उत्तर पद कहते है।

विग्रह के आधार पर समास के भेद –

1. नित्य जाति
2. अनित्य जाति

1. नित्य जाति – जिस समास का सामान्य रूप मे विग्रह नही होता है वह नित्य जाति का समास कहलाता है। – अव्ययीभाव

2. अनित्य जाति –जिस समास का सामान्य रूप मे विग्रह हो जाता है उन्हे अनित्य जाति का समास कहते है।

- समास के 6 भेद होते है –
  1. अव्ययीभाव समास
  2. तत्पुरुष समास
  3. कर्मधारय समास
  4. द्विगु समास
  5. द्वन्द्व समास
  6. बहुब्रीहि समास

- <u>अव्ययीभाव समास</u> – जिस समास मे प्रथम पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। उसे अव्ययीभाव समास कहते है

अव्ययीभाव समास के दो भेद माने जाते है
1. पूर्व अव्ययपद
2. पूर्व नाम पद

1. <u>पूर्व अव्ययपद</u> – इसमे पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा होता है ।

उदाहरण –
आमरण – मरण पर्यन्त / मरण तक
आजन्म – जन्म पर्यन्त
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
यथा क्रम – क्रम के अनुसार / जैसा क्रम
यथा संभव – जैसा संभव हो।
यथागति – गति के अनुसार / जैसी गति
प्रतिदिन – दिन – दिन / हर दिन
प्रतिवर्ष – हर वर्ष / वर्ष –वर्ष
प्रत्येक – हर एक या एक – एक
जीवनभर – पूरा जीवन
भरपेट – भेट भरकर

2. <u>पूर्वनाम पद अव्ययीभाव समास</u> –

इसमे पहला पद आता है तथा जहाँ दो संज्ञा शब्द समान रूप मे आ जाते है वहाँ पर भी पूर्वनाम पद अव्ययीभाव होता है।

उदाहरण – रातो रात – रात ही रात मे
हाथो हाथ – हाथ ही हाथ मे
बीचो बीच – बीच के भी बीच मे
घर घर – प्रतिघर / घर घर
दिन दिन – प्रतिदिन / हरदिन
वर्ष वर्ष – हरवर्ष प्रतिवर्ष
जीवन भर – पूरा जीवन

- <u>तत्पुरूष समास</u> – जिस समास मे उत्तरपद प्रधान होता है और प्रथम पद विशेषण जैसा होता है विशेषण नही होता तो उसे तत्पुरूष समास कहते है।

उदाहरण –
अहरह – अहन + अहन् व्यंजन संधि
दिन – दिन अव्ययीभाव समास
लुप्त कारक चिन्ह तत्पुरूष समास

जिस कारक चिन्ह का लोप हो जाता है उसी के आधार पर समास का नामकरण हो जाता है।

कारक विभक्ति चिन्ह –

कर्ता – ने
कर्म – को
करण – से सहायता से द्वारा , के द्वारा
सम्प्रदान – के लिए
अपादान – से अलग होना
सम्बन्ध – का , के की ,
अधिकरण – मे या पर
सम्बोधन – हे अरे ! ओ

कर्म तत्पुरूष समास (को)

उदाहरण –
गृहगत – घर को गया (आगत)
बाजार आपणगत – बाजार को गया
ग्राम गत – गाँव को गया
गगनचुम्बी – गगन को चुम्बने वाला
स्वर्गगत – स्वर्ग को गया
दिलतोड – दिल को तोडने वाला

करण तत्पुरूष समास – (से)
उदाहरण –
तृष्णापीडित – तृष्णा से पीडित
कामपीडित – काम से पीडित
ज्वरपीडित – ज्वर से पीडित
हस्तलिखित – हस्त से लिखित
वाग्युद्ध – वाक के द्वारा युद्ध

विशेष बात –
अंग विकार के योग मे करण तत्पुरूष समास होता है।
कर्णबधिर – कान से बहरा
पादपंगु – पैर से लगडा
धर्माध मदान्ध – मोहार्ध प्रथम अधिकरण को माने
धर्म मे अन्धा मद मे अन्धा मोह
सम्प्रदान तत्पुरूष समास (के लिए)
उदाहरण –
विद्यानसभा – विद्यान के लिए सभा
विद्यानपरिषद् – विद्यान के लिए परिषद्
लोकसभा – लोक के लिए सभा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
रसोईघर – रसाई के लिए घर
गुरूदक्षिणा – गुरू के लिए दक्षिणा
कृषि भवन – कृषि के लिए भवन
उद्योगभवन – उद्योग के लिए भावन

कृषि सम्बन्धी कार्यो के लेखा – जोखा के लिए भवन
यज्ञ – लकडी दारू – सोमरस

- अपादान तत्पुरूष से अलग होना
  उदाहरण :-
  कर्जमुक्त – कर्ज से मुक्त
  ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
  चिन्तामुक्त – चिंता से मुक्त
  देशमुक्त – देश से निकाला
  पथ भ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
  विद्यालयगत – विद्यालय से आया
  वनागत – राम वन से आया
  ग्रामागत – (ग्राम गाँव) से आया।

से लेकर अर्थ में अपादान तत्पुरूष समान होता है।
जमांध – जन्म से अन्धा से लेकर अर्थ में होता है।
बालांध – बचपन से अन्धा
लज्जा रक्षा भय विवाहण करना
इन शब्दों के योग में अपादान तत्पुरूष होता है।

उदाहरण :-
अश्वभीत – अश्व से भयभीत
अश्वरक्षित – अश्व से रक्षा करना
ओला – करकाभीत – ओले से डर
गुर्वधीत – गुरू से अधिन

- सम्बन्ध तत्पुरूष समास – का के की
- राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति

राजकुमार – राजा का कुमार (पुत्र)
पशुबलि – पशु की बलि
मात्राज्ञा – माता की आज्ञा
मृगपालक – मृग का बच्चा होना

- अधिकरण तत्पुरूष समास – में पर

उदाहरण :-
वनवास – वन में वास
आपबीती – आप पर बीती
नगर प्रवेश – नगर में प्रवेश
रामाश्रित – राम से आश्रित
शरणागत – शरण में आगत (में आया)

- नण् तत्पुरूष समास :- यह समास में न के स्थान पर यदि बाद में व्यंजन होता है तो अ हो

जाता है न के बाद कोई स्वर आता है तो न के स्थान पर अन् हो जाता है।

उदाहरण :-

न सत्य – असत्य
न उचित – अनुचित
न ऐतिहासिक – अनैतिहासिक
न आवश्यक – अनावश्यक
न ज्ञान – अज्ञान
न पर्णा – अपर्णा – पार्वती
न धर्म – अधर्म
न भय – अभय
पार्वती ने पत्ते खाना छोड दिया ।

- मध्यपद लोपी तत्पुरूष समास
  लुप्तपद तत्पुरूष समास

उदाहरण :-

दही बडा – दही में डूबा हुआ बडा
रेलगाडी – पटरी पर चलने वाली गाडी
बैलगाडी – बैलो द्वारा खींचकर चलाई जाने वाली गाडी
गुडधानी – गुड में मिली हुई धानी
रसगुल्ला – रस में डूबा हुआ गुल्ला
घृतान्त – घी में पका हुआ अन्न

- उपपद तत्पुरूष समासः-
  उत्तर पद में क्रिया रूप में प्रत्यय हो जिससे वाला अर्थ प्रकट होता है।

उदाहरणः-

जलद – जल को देने वाला
रचनाकार – रचना को करने वाला
मधुप – शहद – मधु को पीने वाला
नभचर – आकाश में चलने वाला
खग – (ख) आकाश में (ग)गमन करने वाला
स्वर्णकार – स्वर्ग का काम करने वाला
कुम्भकार – कुम्भ को आकार देने वाला
राजनीतिज्ञ – राजनीति को जानने वाला

- अलुक तत्पुरूष समासः- जिसमें हमें कोई विभक्ति दिखाई देती है वह अलुक तत्पुरूष समास है

उदाहरण :-

वनचर – वन में विचरण करने वाला
विश्वभर – विश्व को भ्रमण करने वाला
वसुन्धरा – वसुओं को धारण करने वाला
खचर – ख आकाश में विचरण करने वाला
वृहस्पति – वाणी का जो पति वृहत् वाणी
वाचस्पति – वाणी का जो पति

- कर्मधारय समास :- कर्मधारय समास में केवल और केवल विशेषता पाई जाती है। जहाँ विशेष्य की विशेषता बताई जाती है या उपमेय की उपमानता बताई जाती है वहाँ कर्मधारय समास होता है।

नीलकमल – नीला है जो कमल
महापुरूष – महान है जो पुरूष
चरणकमल – कमल रूपी चरण
संध्यासुन्दरी – संध्या रूपी सुन्दरी
विद्यारत्न – विद्या रूपी रत्न
लाल मिर्च – लाल है जो मिर्च
कमल मुख – कमल रूपी मुख
पीला वस्त्र – पीला है जो वस्त्र
अम्बरपनघट – अम्बर रूपी पनघट
नीलीगाय – नीली है जो गाय
सतपुरूष – सत्य है जो पुरूष

विशेष बातः – यदि दोनो पद पूर्व पद उत्तर पद विशेषता बताने वाले आ जाते है तो वहा कर्मधारय समास नही होता है। वहाँ द्वन्द्व समास माना जाता है।

हृष्ट – पुष्ट – हृष्ट और पुष्ट
मोटा – ताजा – मोंटा और ताजा
नीला – पीला – नीला और पीला

5. द्वन्द्व समास :-
   जिस समास में दोनो पद समास होते है उसे द्वन्द्व समास कहते है । द्वन्द्व समास के तीन भेद माने जाते है ।

1. इतरेतर द्वन्द्व – और एवं तथा
2. समाहार द्वन्द्व – आदि इत्यादि
3. वैकल्पिक द्वन्द्व – या अथवा वा

1. इतरेतर द्वन्द्व :- माता पिता कृष्णा अर्जुन लाल पीला इधर उधर यहाँ वहाँ अष्टादस

एकादश – एक और दश
माता – पिता = माता और पिता
लाल – पीला = लाल और पीला
कृष्ण – अर्जुन = कृष्ण और अर्जुन
इधर – उधर = इधर और उधर
यहाँ – वहाँ = यहाँ और वहाँ
अष्टादश = आठ और दश

विशेष बातः-

एक से दस तक संख्याओं तथा दस से भाज्य संख्याओं को छोडकर अन्य समस्त संख्या वाची शब्दों में द्वन्द्व समास होता है।

उदाहरण :-

25 पच्चीस - पाँच और बीस
68 अडसठ - आठ और साठ

2. समाहार द्वन्द्व समास :-

हाथ पैर - हाथ - पैर आदि
चिट्ठी पतरि - चिट्ठी - पतरि आदि
बाल बच्चा - बाल - बच्चा आदि
फल फूल - फल - फूल आदि
बहु बेटी - बहु - बेटी आदि
चाय पानी - चाय - पानी आदि
धन दौलत - धन - दौलत आदि
पेड पौधे - पेड - पौधे आदि
भला बुरा - भला - बुरा आदि
कीडा मकोडा - कीडा - मकोडा आदि

विशेष बात :- इस समास में निर्थक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

जैसेः-

चाय - वाय - चाय आदि
रोटी - ओटी - रोटी आदि

3. वैकल्पिक द्वन्द्व :-

इस समास में विरूद्ध अर्थ वाले शब्द होते है।

जैसे :- ठण्डा - गर्म - ठण्डा और गर्म
शितोष्ण - शीत और ऊष्ण
दिन रात - दिन और रात
सुख दुख - सुख या दुख
लाभ हानि - लाभ या हानि
धर्माधर्म - धर्म या अधर्म
दस बीस - दस या बीस
सौ दो सौ - सौ या दो सौ

- बहुब्रीही समास :-

इस समास में न तो प्रथम पद प्रधान होता है और ना ही द्वितीय पद प्रधान होता है और ना ही द्वितीय पद प्रधान होता है इसका अन्य पद प्रधान पद प्रधान होता है।

इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता है।

उदाहरण :- है जिसका

गजानन - हाथी के मुख के समान मुख
चतुरानन - चार आनन है जिसके ब्रह्मा
पंचानन - पाँच आनन है जिसके शिव
षडानन - छः आनन है जिसके कार्तिक
दशानन - दस आनन है जिसके रावण
षठमुख - छः मुख है जिसके कार्तिक
आशुतोष - शीघ्र प्रसन्न होने वाला

ऋषिकेश

ऋषिकेश - इन्द्रियों का स्वामी है वह विष्णु

शाखामृग - शाखाओं पर विचरण सहस्त्राल करने वाला बन्दर
त्रयंबक - तीन नेत्र है जिसके शिव
चन्द्रचुड - सिर पर चन्द्रमा
सहस्त्राक्ष - हजारों आँखे है जिसके इन्द्र
सिर के .ऊपर चन्द्रमा है जिसके वह शिव

<u>द्विगु समास</u>

जिस समास मे पहला पद संख्यावाची होता है और दूसरा पद संज्ञा होता है तथा समूह का बोध होता है उसे द्विगु समास कहते है।

उदाहरण -

त्रिलोकी - तीन लोको का समूह
त्रिमुनि - तीन मुनियो का समूह
तिराहा - तीन राहो का समूह
चौराहा - चार राहों का समूह
सतक - सौ का समूह है।
त्रिवणी - तीन नदियो का समूह
सतसई - सात सौ का समूह
सप्ताह - सात अहो अहन्

लिंग

हिंदी में दो लिंग हैं–पुल्लिंग और स्त्रीलिंग । संस्कृत का नपुंसक लिंग हिंदी में पुल्लिंग या स्त्रीलिंग के रूप में विभाजित हो गया है और इसी से अहिंदीभाषियों को हिंदी भाषा की लिंग की अवधारणा को समझने में बहुत कठिनाई होती है । दरअसल कौनसे शब्द पुल्लिंग है और कौनसे स्त्रीलिंग इसके कोई स्पष्ट नियम नहीं हैं, हिंदी के व्याकरणों ने जितने नियम बनाए है उतने ही अपवाद भी उपस्थित हो गए हैं । यदि आकारांत शब्द पुल्लिंग है और ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग है तो आकारांत शब्द स्त्रीलिंग भी है और इकारांत/ईकारांत शब्द पुल्लिंग भी है–

आकारांत पुल्लिंग	आकारांत स्त्रीलिंग	इकारांत/ईकारांत पुल्लिंग	ईकारांत स्त्रीलिंग
झंडा, घडा	दशा, माला	कवि, मोती	झंडी
मटका, देवता	लता, कथा	पति, दही	घडी
पंखा, नाला	भाषा, धारा	रवि, घी	मटकी
धनिया, काढा	कविता, पूजा	हरि, पानी	देवी
गजरा, पुदीना	अनुजा, शिक्षा	यति	पंखी
कहवा, खीरा	परीक्षा, विधवा	मुनि	नली
रायता, करेला	आज्ञा, विद्या	शशि	
झुमका, लोहा	दया, कृपा		
ताँबा, पतीला			
पारा, मूँगा			

वचन

हिंदी में वचन दो होते है– एकवचन और बहुवचन । संस्कृत में द्विवचन भी होता था किन्तु हिंदी में दो के लिए भी बहुवचनवाला रूप ही चलता है ।

– वचन का प्रभाव संज्ञा (लडका–लडके) सर्वनाम (मैं–हम), विशेषण (छोटा लडका छोटे लडके) तथा क्रिया (पढता है–पढते है) पर पडता है ।

संज्ञाओं में एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम एवं तिर्यक रूप–

1.

आकारांत पुल्लिंग	एकवचन	तिर्यकरूप	बहुवचन	तिर्यक रूप
एकारांत में संज्ञा	धागा	धागे (में)	धागे	धागों (में)
आ → ए	लडका	लडके (में)	लडके	लडकों (में)
	कमरा	कमरे (में)	कमरे	कमरों (में)
	मुर्गा	मुर्गे (में)	मुर्गे	मुर्गो (में)

आकारांत का अर्थ है जो शब्द आ स्वर के साथ समाप्त होता है; जैसे–लडका, पंखा । इसी प्रकार ईकारांत (लडकी), एकारांत (लडके) एवं ऊकारांत (भालू) शब्द होवे है

2.

आकारांत के अलावा शेष संज्ञा रूपों का एकवचन एवं बहुवचन एक–जैसा होता है ।	एकवचन	तिर्यकरूप	बहुवचन	तिर्यक रूप
	घर बन रहा है ।	घर (में)	घर बन रहे है ।	घरों (में)
	हाथ लटक रहा है ।	हाथ (में)	हाथ लटक रहे है ।	हाथों (में)

	हाथी मचल गया ।	हाथी (में)	हाथी मचल गए ।	हाथियों (में)
	साधु अच्छा है ।	साधु (में)	साधु अच्छे है ।	साधुओं (में)

अन्य शब्द– बोतल, भैंस, पुस्तक, खबर, गाय, पूँछ, आदत, भाषा, कक्षा, पाठशाला, लता, शाखा, इच्छा, शिक्षिका के तिर्यक रूप होंगे– बोतलें, भैंसे, पुस्तकें, भाषाएँ, कक्षाएँ आदि ।

4.

इकारांत स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन	तिर्यक रूप
इ/ई →इयाँ	नाली साफ है ।	नालियाँ साफ है ।	नालियों (में)
	नीति अच्छी है ।	नीतियाँ अच्छी है ।	नीतियों (में)

अन्य शब्द– घोडा, कुर्सी, अशर्फी, साडी, हड्डी, दरी, बाल्टी ।
तिर्यक रूप– अँगूठी, छुरी, चींटी, लकडी, रीति, जाति, पंक्ति
बहुवचन
ई → इयाँ चींटी (बहुवचन)–चींटियों, घोडी (बहुवचन) घोडियों

5.

ऊकारांत	एकवचन	बहुवचन	तिर्यक रूप
ऊकारांत/स्त्रीलिंग	बहू/वधू बैठी है ।	बहुएँ/वधुएँ बैठी है ।	बहुओं (में)
उ/ऊ → उएँ	वस्तु अच्छी है ।	वस्तुएँ अच्छी है ।	वस्तुओं (में)
तिर्यक रूप उ/ऊ → उओं			

6.

या अंतवाली	एकवचन	बहुवचन	तिर्यक रूप
या → याएँ	खटिया टूट गई ।	खटियाएँ टूट गईं ।	खटियाओं (में)
तिर्यक रूप	गुडिया अच्छी है ।	गुडियाएँ अच्छी है ।	गुडियाओं (में)
या → याओं			

चिडी से चिडयाँ बनता है, चिडिया से चिडियाएँ नहीं बनताा
7. बहुवचन सूचक शब्द लगाकर
लोग, जन, सब, गण, – नेता लोग, शिक्षकगणन, गुरूजन, भक्तजन
वृंद, वर्ग आदि बहुवचन बनाना – नारीवृंद, भाईलोग, विद्यार्थिवर्ग, आप सब, तुम सब, मुनिगण, बच्चा लोग ।

एकवचन आदरसूचक का बहुवचन की तरह प्रयोग

भारतीय और हिंदी भाषी संस्कृति में आदरणीय व्यक्ति को हम सम्मानजनक, रुप से संबोधित करते है तो एकवचन शब्दों का भी बहुवचन रूपों में प्रयोग करते है; जैसे–
– मेरे पिता जी रोज व्यायाम करते है । (एकवचन)
– मेरी सफलता पर नाना जी/गुरु जी/बडे भाई साहब बहुत खुश हुए है । (एकवचन)
– अनेक लोग नवाचार (Innovations) कर रहे है । (अनेक (अन+एक)) सदैव बहुवचन है तथा अनेकों शब्द अशुद्ध है ।)

'प्रत्येक' सदैव एकवचन के संदर्भ में

– प्रत्येक/हर–एक/हर कोई व्यक्ति मेहनत कर रहा है । (एकवचन)

कारक

जो क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो या जो किसी शब्द का क्रिया से संबंध बनाए वह कारक है ।''
जैसे–माइकल जैक्सन ने पॉप संगीत को काफी ऊँचाई पर पहुंचाया ।
यहाँ 'पहुचाना' क्रिया का अन्य पदों माइकल जैक्सन, पॉप संगीत, ऊँचाई आदि से संबंध है । वाक्य में 'ने' 'को' और 'पर' का भी प्रयोग हुआ है। इसे कारक–चिह्न या विभक्ति–चिह्न कहते हैं । यानी वाक्य में कारकीय संबंधों को बतानेवाले चिह्नों को कारक चिह्न अथवा परसर्ग कहते हैं ।
हिंदी भाषा में कारकों की कुल संख्या आठ मानी गई है, जो निम्नलिखित है–

कारक	परसर्ग/विभक्ति
1. कर्त्ता कारक	शून्य, ने (को, से, द्वारा)
2. कर्म कारक	शून्य, को
3. करण कारक	से, द्वारा (साधान या माध्यम)
4. सम्प्रदान कारक	को, के लिए
5. अपादान कारक	से (अलग होने का बोध)
6. संबंध कारक	का–के–की, ना–ने–न,रा–रे–री
7. अधिकाण कारक	में, पर
8. संबोधान कारक	है, हो, अरे, अजी,.....

<u>कर्त्ता कारक</u>
''जो क्रिया का सम्पादन करे, 'कर्त्ता कारक' ककहलाता है ।''
अर्थात् कर्त्ता कारक क्रिया (काम) करता है । जैसे–
आतंकवादियों ने पूरे विश्व में आतंक मचा रखा है ।
इस वाक्य में 'आतंक मचाना' क्रिया है, जिसका सम्पादक 'आतंकवादी' है यानी कर्त्ता कारक है ।
कर्त्ता कारक का परामर्श 'शून्य' और 'ने' चिह्न लुप्त रहता है, वहीं कर्त्ता का शून्य चिह्न माना जाता है ।
जैसे–
पेड–पौधें हमें ऑक्सीजन देते है ।
यहाँ पेड–पौधे में 'शून्य चिह्न है ।
कर्त्ता कारक में 'शून्य' और 'ने' के अलावा 'को' और से/द्वारा चिह्न भी लगाया जाता है । जैसे–
उसको पढना चाहिए ।
उनसे पढा जाता है ।

कर्त्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग :
सकर्मक क्रिया रहने पर सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्णभूत, संदिग्ध भूत में कर्त्ता के आगे 'ने' चिह्न आता है । जैसे–
मैंने तो आपको कभी गैर नहीं माना । (सामान्य भूत)
मैंने तो आपको कभी गैर नहीं माना है । (आ. भूत)
मैंने तो आपको कभी गैर नहीं माना था । (पूर्ण भूत)
मैंने तो आपको कभी गैर नहीं माना होगा । (सं. भूत)
मैंने तो आपको कभी गैर नहीं माना होता । (हितु. भूत)

<u>कर्म कारक</u>
''जिस पर क्रिया (कम) का फल पडे, 'कर्म कारक' कहलाता है ।''
जैसे–तालिबानियों ने पाकिस्तान को रैद डाला ।
सुन्दर लाल बहुगुना ने 'चिपको आन्दोलन चलाया ।
इन दोनों वाक्यों में 'पाकिस्तान' और 'चिपको आन्दोलन' कर्म है; क्योंकि 'रौंद डालना' और 'चलाना' क्रिया से प्रभावित है ।
कर्म कारक का चिह्न 'को' है; परन्तु जहाँ 'को' चिह्न नहीं रहता है, वहाँ कर्म का शून्य चिह्न माना जाता है ।
जैसे–
वह रोटी खाता है ।
भालू नाच दिखाता है ।
इन वाक्यों में 'रोटी' और 'नाच' दोनों के चिह्न–रहित कर्म है ।
कभी–कभी वाक्यों में दो–दो कर्मो का प्रयोग भी देखा जाता है, जिनमें एक मुख्य कर्म और दूसरा गौण कर्म होता है । प्रायः वस्तुबोधक को मुख्य कर्म और प्राणिबोधक को गौण कर्म माना जाता है। जैसे–

माँ ने <u>बच्चे को</u> <u>दूध</u> पिलाया ।
↓ ↓
गौण कर्म मुख्य कम

<u>क्रिया पर कर्म का प्रभाव</u>
जैसे–माइकल जैक्सन ने पॉप संगीत को काफी ऊँचाई पर पहुंचाया ।
1. यदि वाक्य मे कर्म चिह्न–रहित (शून्य) रहे और कर्त्ता में 'ने' लगा हो तो क्रिया कर्म के लिंग–वचन के अनुसार होती है । जैसे–
कवि ने कविता सुनाई ।
माँ ने रोटी खिलाई ।

मैंने एक सपना देखा ।
तिलक ने महान भारत का सपना देखा था।
गुलाम अली ने एक अच्छी गजल सुनाई थी ।
बन्दर ने कई केले खाए हैं ।
बच्चों ने चार खिलौने खरीदे होंगे ।

2. यदि वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों चिह्न-युक्त हों तो क्रिया सदैव पु. एकवचन होती है जैसे-
स्त्रियों ने पुरूषों को देखा था ।
चरवाहों ने गायों को चराया होगा ।
शिक्षक ने छात्रों को पढाया है ।
गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा को महत्व दिया है ।

3. क्रिया की अनिवार्यता प्रकट करने के लिए कर्ता में 'ने' की जगह 'को'' लगाया जाता है और किया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है। जैसे-
उस अभ माँ को बच्चा पालना ही होगा ।
अंशु को एम. ए. करना ही होगा।
नूतन को पुस्तकें खरीदनी होंगी ।

4. अशक्ति प्रकट करने के लिए कर्त्ता में 'से' चिह्न लगाया जाता है और कर्म को चिह्न-रहित ऐसी स्थिति में क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार ही होती है। जैसे-
रामानुज से पुस्तक पढी नहीं जाती ।
उससे रोटी खायी नहीं जाती है ।
शील्पा से भात खाया नहीं जाता था ।

5. यदि कर्त्ता चिह्न युक्त हो, पहला कर्म भी चिह्न-युक्त हो और दूसरा कर्म चिह्न-रहित रहे तो क्रिया दूसरे कर्म (मुख्य कर्म) के अनुसार होती है। जैसे-
माता ने पुत्री को विदाई के समय बहुत धन दिया ।
पिता ने पुत्री को/पुत्र को बधाई दी ।

करण कारक

''जिस पर क्रिया (कम) का फल पडे, 'कर्म कारक' कहलाता है ।''

अर्थात् करण कारक साधन का काम करता है । इसका चिह्न 'से' है, कहाँ-कहाँ 'द्वारा' का प्रयोग भी किया जाता है जैसे-
चाहो तो इस कलम से पूरी कहानी लिख लो ।
पुलिस तमाशा देखती रही और अपहर्त्ता बोलेरो से लडकी को ले भागा ।
छात्रो को पत्र के द्वारा परीक्षा की सूचना मिली

उपयुक्त उदाहरणों में कलम, बोलेरो और पत्र करण कारक है ।

कभी-कभी वाक्य में करण का चिह्न लुप्त भी रहता है, वहाँ भ्रमित नहीं हेना चाहिए, सीधे क्रिया के साधन खोजने चाहिए । जैसे-
किससे या किसके द्वारा काम हुआ अथवा होता है?
मैं आपको आँखों देखी खबर सुना रहा हूँ । किससे देखी ? आँखों से (करण)
आज भी संसार मे करोडों लोग भूखों मर रहे हैं । (भूखों-करण कारक)
करीम मियाँ ने दो-दो जवान बेटो को अपने हाथों दफनाया (हाथों-करण कारक)

प्रेक कर्त्ता कारक में भी करण का 'से' चिह्न देखा जाता है । जैसे-
यदि शत्रुओं में तेरा नाम न जपवाऊँ तो मैं विष्णुगुप्त चाणक्य नहीं ।
अहमदाबाद जाते हो तो मेरा प्रस्ताव लोगों से मनवा के छोडना ।

क्रिया की रीति या प्रकार बताने के लिए भी 'से' चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे-
धीरे से बालो दीवार के भी कान होते हैं ।
जहाँ भी रहो खुशी से रहो, यहीं मेरा आशीर्वाद है ।

सम्प्रदान कारक

''कर्त्ता कारक जिसके लिए या जिस उद्देश्य के लिए क्रिया का सम्पादन करता है, सम्प्रदान कारक होता है ।''

जैसे-मुख्य बत्री नीतीश कुमार ने बाढ पीडितों के लिए अनाज और कपडे बँटवाए ।

इस वाक्य में 'बाढ-पीडित' सम्प्रदान कारक है; क्योंकि अनाज और कपडे बँटवाने का काम उनके लिए ही हुआ है । जैसे-
गृहिणी ने गरीबों को कपडे दिए ।
माँ ने बच्चे को मिठाइयाँ दीं ।

इन उदाहाणों में गरीबों को... .... गरीबों के लिए और बच्चे को ..... बच्चे के लिए की और संकेत है । प्रथम उदाहरण मे एक और बात है..... जब कोई वस्तु किसी को हमेशा-हमेशा के लिए (दान आदि अर्थ में) दी जाती है, तब वहाँ 'को' का प्रयोग होता है जो 'के लिए' का बोध कराता है । प्रथम उदाहाण में गरीबों को कपडे दान में दिए गए हैं । इसलिए 'गरीब' सम्प्रदान कारक का उदाहरण हुआ ।

यदि 'गरीबो' की जगह 'धोबी' का प्रयोग किया जाय तो वहाँ 'को', 'के लिए' भी सम्प्रदान कारक का चिह्न ही लगाया जाती है जैसे-

पिताजी को प्रणाम । (पिताजी के लिए प्रणाम)
दादाजी को नमस्कार । (दादाजी के लिए नमस्कार)

को' और 'के लिए' के अतिरिक्त 'के वास्ते और 'के निमित्त' का भी प्रयोग होता है । जैसे–

रावण के वास्ते ही रामावतार हुआ था ।
यह चावल पूजा के निमित्त है ।

'को' और 'के लिए' के अतिरिक्त 'के वास्ते और 'के निमित्त' का भी प्रयोग होता है । जैसे–

रावण के वास्ते ही रामावतार हुआ था ।
यह चावल पूजा के निमित्त है

'को' का विभिन्न रूपों में प्रयोग और भ्रम :

नीचे लिखे वाक्यों पर गौर करें–

यह कविता कई भावों को प्रकट करती है ।
फल को खूब पका हुआ होना चाहिए ।
वे कवियों पर लगे हुए कलंक को धो डाले ।
लोग नहीं चाहते थे कि वे यातनाओं को झेलें ।

अब इन वाक्यों को देखें–

यह कविता कई भाव प्रकट करती है ।
फल खूब पका हुआ होना चाहिए ।

इसी तरह उपर्युक्त वाक्यों से 'को' हटाकर उन्हें पढें और दोनों में तुलना करें । आप पाएँगे कि 'को' रहित वाक्य ज्यादा सुन्दर हैं; क्योंकि इन वाक्यों में 'को' का अनावश्यक प्रयोग हुआ है ।

कुछ वाक्यों में 'को' के प्रयोग से या तो अर्थ ही बदल जाता है या फिर वह बहुत ही भ्रामक हो जाता है । नीचे लिखे वाक्यों को देखें–

प्रकृति ने रात्रि को विश्राम के लिए बनाया है ।
भ्रामक भाव– (प्रकृति ने रात्रि इसलिए बनाई है कि वह विश्राम करें)
प्रकृति ने रात्रि विश्राम के लिए बनाई है।
सामान्य भाव–(प्रकृति ने रात्रि जीव–जन्तुओं के विश्राम के लिए बनाई है)

कुछ लोग 'पर', 'से', 'के लिए' और 'के हाथ' के स्थान पर भी 'को' का प्रयोग कर बैठते हैं ।

<u>अपादान कारक</u>

''वाक्य में जिस स्थान या वस्तु से किसी व्यक्ति या वस्तु की पृथकता अथवा तुलना का बोध होता है, वहाँ अपादान कारक होता है ।''

यानी अपादान कारक से जुदाई या विलगाव का बोध होता है । प्रेम, घृणा, लज्जा, ईर्ष्या भय और सीखने आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए अपादान कारक का हीं प्रयोग किया जाता है क्योंकि उक्त कारणों से अलग होने की क्रिया किसी–न–किसी रूप में जरूर होती है । जैसे–

पतझड में पीपल और ढाक के पेडों से पत्ते झडने लगते है ।
वह अभी तक हैदराबाद से नहीं लौटा है ।
मेरा घर शहर से दूर है ।
उसकी बहन मुझसे लजाती है।
खरगोश बाघ से बहुत डरता है ।
नूतन को गंदगी से बहुत घृणा है ।
हमें अपने पडोसी से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए ।
मैं. आज से पढने जाऊँगा ।

'से' का प्रयोग

'से' चिह्न 'करण' एवं 'अपादान' दोनों कारकों का है; किन्तु प्रयोग में काफी अंतर है । करण कारक 'से' माध्यम या साधन के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि अपादान का 'से' जुदाई या अलग होने या करने का बोध कराता है । करण का 'से' साधन से जुडा रहता है जैसे–

वह कलम से लिखता है । (साधन)
उसके हाथ से कलम गिर गई। (हाथ से अलग होगा)

1. अनुक्त और प्रेरक कर्ता कारक में 'से' का प्रयोग होता है । जैसे–

मुझसे रोटी खायी जाती है । (मेरे द्वारा)
आपसे ग्रंथ पढा गया था । (आपके द्वारा)
मुझसे सोया नहीं जाता ।
वह मुझसे पत्र लिखवाती है ।

2. किया करने की रीति या प्रकार बताने में भी 'से ' का प्रयोग होता है। जैसे–

धीरे (से) बोलो, कोई सुन लेगा ।
जहाँ भी रहो, खुशी से रहो ।

3 मूल्यवाचक संज्ञा और प्रकृति बोध में 'से' का प्रयोग देखा जाता है। जैसे–

कल्याण कंचन से मोल नहीं ले सकते हो ।
छूने से गर्मी मालूम होती है ।
वह देखने से संत जान पडता है ।

4. कारण, साथ, द्वारा, चिह्न, विकार, उत्पत्ति और निषेध में भी 'से' का प्रयोग होता । जैसे–

आलस्य से वह समय पर न आ सका ।
दया से उसका हृदय मोम हो गया ।
गर्मी से उसका चेहरा तमतमाया हुआ था ।